



Original Article

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में धार्मिक समस्याओं का चित्रण: विशेष संदर्भ – ‘कोई आवाज़ देता है’ और ‘आँधियों धीरे चलो’

डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

कर्मवीर भाऊराव पाटील विश्वविद्यालय, सातारा, घटक महाविद्यालय -छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

Manuscript ID:

IJAAR-C130319

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 89 - 95

Submitted: 17 Jan.2026

Revised: 24 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785532

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785532>



Creative Commons



सार:

आधुनिक काल की हिंदी ग़ज़ल ने सामाजिक और राजनीतिक वास्तविक जीवन के साथ-साथ धार्मिक समस्याओं को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। कुँअर बेचैन की ग़ज़लों का इस दिशा में एक महत्वपूर्ण स्थान है, वे आधुनिक जीवन की आपाधापी में उभरी धार्मिक समस्याओं जैसे विश्वास का संकट, भक्ति का -हास, आध्यात्मिक दिखावे को संवेदनशीलता से प्रकाशित करते हैं। “कोई आवाज़ देता है” (2005) और “आँधियों धीरे चलो” (2014) संग्रहों में बैचैन जी ने धार्मिकता की आंतरिक विडंबनाओं को स्पष्ट किया है। इन दो ग़ज़ल संग्रह के संदर्भ में धार्मिक समस्याओं का विश्लेषण किया है, जिसमें विश्वास संकट, भक्ति का क्षय और आध्यात्मिक -हास जैसे आयाम शामिल हैं।

मुख्य शब्द: धार्मिक, समस्या, ग़ज़ल, भक्ति, विश्वास, जीवन, आध्यात्मिकता, धर्म, सांप्रदायिकता.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे. (2026). कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में धार्मिक समस्याओं का चित्रण: विशेष संदर्भ – ‘कोई आवाज़ देता है’ और ‘आँधियों धीरे चलो’. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 89 - 95. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785532>

प्रस्तावना:

हिंदी ग़ज़ल उर्दू से प्रभावित होकर प्रेम और विरह के कटघरे से निकलकर आधुनिक युग के संदर्भों में सामाजिक,

राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं का चित्रण करने लगी। दुष्यंत कुमार के उपरांत कुँअर बेचैन ने ग़ज़ल को आध्यात्मिकता से जोड़ा, जहाँ धार्मिक समस्याएँ न कि धार्मिक



कट्टरता, बल्कि आंतरिक आध्यात्मिक संकट हैं। वर्तमान समाज में धर्म रीति-रिवाजों तक मर्यादित हो गया है, जिससे विश्वास का हास और भक्ति का प्रदर्शन कुँअर बेचैन की ग़ज़लों के प्रमुख मुद्दे हैं। “कोई आवाज़ देता है” में आध्यात्मिक पुकार की व्यर्थता और “आंधियों धीरे चलो” में जीवन की आंधियों के बीच दैवीय करुणा की प्रार्थना इन संग्रहों की विशेषता है। यह शोध पत्र धार्मिक समस्याओं के चित्रण को इन संग्रहों के माध्यम से विश्लेषित करता है।

कुँअर बेचैन जीवन और साहित्यिक परिचय:

कुँअर बेचैन (मूल नाम: कुँवर बहादुर सिंह सक्सेना) का जन्म 1 जुलाई, 1942 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के उमरी गाँव में हुआ। उनका बचपन चंदौसी में बीता। उन्होंने एम.कॉम., एम.ए. (हिंदी) और पीएच.डी. प्राप्त की। वे गाजियाबाद के एम.एम.एच. कॉलेज में हिंदी विभागाध्यक्ष रहे। उनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाओं और आध्यात्मिक खोजों से ओतप्रोत हैं। 29 अप्रैल 2021 को कोविड-19 से उनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख कृतियाँ: शामियाने काँच के (1983), दीवारों पर दस्तक (1991), कोई आवाज़ देता है (2005), आंधियों धीरे चलो (2014)। इनमें धार्मिक समस्याएँ आध्यात्मिक संवेदनाओं के रूप में व्यक्त होती हैं जहाँ करुणा, विश्वास और भक्ति को आधुनिक संकटों से जोड़ा गया है।

धार्मिक समस्याओं की अवधारणा:

धार्मिक समस्याएँ आधुनिक संदर्भ में केवल बाह्य कट्टरता नहीं, बल्कि आंतरिक संकट हैं – जैसे विश्वास का हास, भक्ति का क्षय, दैवीय न्याय की प्रतीक्षा में व्याकुलता और आध्यात्मिक शून्यता। महानगरीय जीवन में भौतिकवाद धर्म

को रूढ़ि बना देता है, जिससे मनुष्य की आध्यात्मिक खोज अधर में लटक जाती है। कुँअर बेचैन इन समस्याओं को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ते हैं, जहाँ करुणा दैवीय गुण के रूप में उभरती है।

संग्रहों का परिचय:

“कोई आवाज़ देता है” (2005): इस संग्रह में आध्यात्मिक पुकार की व्यर्थता को प्रमुखता दी है। ग़ज़लें अंतर्मन के द्वंद्व और बेचैनी को दर्शाती हैं, जहाँ मनुष्य दैवीय आवाज़ की इंतजार में व्याकुल है।

“आंधियों धीरे चलो” (2014): जीवन की आंधियों के बीच दैवीय करुणा की प्रार्थना इसकी विशेषता है। ग़ज़लें धार्मिक विश्वास को जीवन की कठोरताओं से टकराते हुए चित्रित करती हैं, जैसे “बढ़ रही है दिल की धड़कन आंधियों धीरे चलो”।

भारत में प्राचीन काल से धर्म की पताका को विशेष महत्व रहा है। इस आधार भारत की पहचान धर्म प्रधान राष्ट्र के रूप में रही है। “धर्म एक आदिम मार्ग है, जिसे सामाजिक व्यवस्था के लिए आवश्यक बताया जाता है”।¹ एक समय था भारत आचार्यों, गुरुजनों का देश कहलाता था। हमारे संत, महात्मा, एवं आचार्य देश-विदेशों में जाकर वहाँ धर्म और अध्यात्म का संदेश लोगों के हृदय तक पहुँचाने का पुण्य कार्य किया करते थे। भारतीय संस्कृति और जीवन का आधारभूत तत्व, यदि धर्म को माना जाय तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म का उद्देश्य समझाते हुए यह कहा है - “धर्म का उद्देश्य यह है कि सभी मनुष्य के शरीर बुद्धि मन और उनकी संकल्प शक्ति का विकास हो। ईश्वर का ध्यान करने से मन में अच्छे भाव पैदा



करने से और आत्मसंयमन करने से मनुष्यों के स्वास्थ्य, व्यक्तिमत्व का विकास होता है। और आदमी आदमी के बीच एकात्मता की भावना पैदा होती है। वे चाहे किसी भी धर्म के मानने वाले हो, उनमें एक सच्ची एकता होती है। जैसे वे सब एक ही परिवार के सदस्य हैं। बुनियादी तौर पर दुनियाँ के सभी धर्म एक जैसे हैं।¹² वास्तव में धर्म यह संकल्पना व्यापक और पूर्ण रूप से सहिष्णु, उदार एवं उदात्त भावी होती है। संकुचित विचार एवं संकीर्ण मानसिकता के लिए उसमें किसी भी प्रकार का स्थान नहीं होता है। धर्म सबके लिए खुले मंच के समान होना चाहिए। उसमें उच्च-नीचता का भाव और जातिगत संकीर्णता या किसी भी प्रकार का भेद न हो, तभी तो डॉ. इकबाल सही कहते हैं।

'मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'

आज का समय बदल गया और उसके साथ-साथ धर्म का स्वरूप भी बदल गया। धर्म का सर्वसमावेशक और समानता स्वरूप नष्ट हो गया। उसमें सड़ी-गली कालबाह्य रूढ़ियों, जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थ परम्पराओं का प्रादुर्भाव दिन-ब-दिन बढ़ गया। धर्म के नाम पर उसमें नए कर्मकांड, मंत्र-तंत्र, आडम्बर और अंधविश्वास बढ़ गए। पुरोहित और धर्म के ठेकेदारों, पुजारियों ने धर्म के सुसंस्कारित ढाँचे को परिवर्तित कर उसे चमत्कारिक, हीन और विकृत बनाकर रख दिया है। प्राचीन काल से वर्तमान तक के काल में प्रवेश करने तक धर्म के क्षेत्र में अनेकानेक प्रकार की विकृतियाँ निर्माण हो गई हैं। आज धर्म के नाम पर चारों तरफ ढकोसलेबाजी चल रही है। धर्माचारियों की स्वार्थी मनोवृत्ति दिन ब दिन बढ़ रही है। धार्मिक स्थलों पर होने वाली अनाचार एवं अत्याचार आदि सब ने धर्म के इस क्षेत्र को कई तरह खराब कर दिया। जिससे धार्मिकता के अन्तर्गत कई प्रकार की विसंगतियों, हीन मानसिकता ने जन्म ले लिया है।

इसकी सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि धर्म के आड में देश में साम्प्रदायिकता पनपने लगी है। जिसके कारण अनेक मासूमों को अपने जान से हाथ धोना पड़ रहा है। कितनी खून की नदियाँ बहाई गई, कितनों के घर जला दिए गए, इसके कारण मानव आज शैतान बन गया है। इस प्रकार से धर्म के कारण आज देश में यह प्रवृत्ति निर्माण हो गई है।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात इसी साम्प्रदायिकता के आधार पर ही देश का बँटवारा हुआ। देश पाकिस्तान व हिन्दुस्तान नाम से दो हिस्सों में बँट गया। इससे देश में दंगे भड़के जिसके कारण हिन्दू और मुसलमानों के बीच एक दीवार विषमता की खड़ी हो गई। देश में लूटमार, हिंसा अत्याचार का तांडव आरम्भ हो गया था। वह नफरत आज भी साम्प्रदायिकता के नाम से बरकरार है। स्वतंत्रता के बाद साम्प्रदायिकता की आग शान्त नहीं हुई। देश में भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न वर्गों में साम्प्रदायिक दंगे होने लगे, कमी हिन्दू और मुस्लिम वर्गों में, तो कभी हिन्दू के ही वर्गों के बीच ये आग जलने लगी। इसमें हमारे देश के कई नेताओं की बली भी चढ़ाई गई है।

साम्प्रदायिकता की यह समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। राजनेता इस समस्या को सुलझाने की बजाय अधिक उलझा रहे हैं। अपने स्वार्थ के लिये इसका उपयोग राजनीति में करने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि, धर्म के ठेकेदारों को ये राजनीतिज्ञ लोग अपने हाथों में लेकर धर्म की राजनीति कर देश के वातावरण को दूषित करने का कार्य करने लगे हैं। वे साम्प्रदायिकता को हवा देते हैं। साम्प्रदायिकता की आग को भड़काने का कार्य ये राजनीतिज्ञ कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि आज देश में साम्प्रदायिकता दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है। समाज में व्याप्त इस साम्प्रदायिकता की



समस्या एवं विकृतियों का चित्रण डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी गजलों के माध्यम से व्यंग्यात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है।

धर्मान्धता के कारण आज समाज में ऐसी स्थिति देखने को मिलती है। आजकल तो धार्मिकता का जहर इस कदर फैल रहा है कि उससे कोई भी नहीं बच पाया। जिससे मानवता को आहत होना पड़ रहा है। देश भटकता जा रहा है। विकास का पहिया रुक गया है। दानवीय प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन सभी का चित्रण डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी रचनाओं में किया है। अपनी एक गजल में वे लिखते हैं –

"यो ठंडी हवा घर में मेरे आई नहीं है।
पछवा है इधर झूमती पुरवाई नहीं है ॥
हर एक शजर दर्द के काँटों से भरा है।
अब आम के बागों में भी अमराई नहीं है ॥
बारूद भरे शब्द है, होठों पे सभी के।
हाथों में किसी शक्स के शहनाई नहीं है ॥"³

देश में ऐसा वातावरण चारों तरफ फैला हुआ है। वर्तमान युग में सम्पूर्ण समाज पर धर्म के ठेकेदारों का वर्चस्व प्रस्थापित हो रहा है, इन धर्म के दलालों के कारण ही आज देश की धर्मनिरपेक्षता तत्व को खतरा निर्माण हुआ है। धार्मिक कट्टरतावाद के कारन मजहब की दीवारें खड़ी हो गई हैं। इन्होंने इस 'मजहब' शब्द को जो सुसंस्कृत आचरण था, इन्हीं धर्म के ठेकेदारों एवं दलालों के कारण वह अब विकृत हो गया है। इस कारण अब आए दिन दंगे फसाद होने की आशंका रहती है और दंगे होते रहते हैं। इसका विवेचन करते हुए डॉ. कुँअर बेचैन लिखते हैं कि धार्मिकता के कारण आज आम लोगों के संबंधों में दरार पैदा हो गई है। रिश्तों की गरिमा खत्म हो गई। चारों तरफ नफरत और घृणा और स्वार्थ का वातावरण दिखाई देता है। उनकी गजल के कुछ शेर इस प्रकार के भाव अभिव्यक्त करते हैं -

"रफ्त: रफ्त: जो हकीकत थे, कहानी हो गये।

खून से सींचे हुये रिश्ते भी पानी हो गये ॥

आप हरियाली बने तो सारे सूखे पेड़ भी।

मुस्कराएँ और उनके रंग धनि हो गये ॥

प्यार रिश्ते और वफा क्या खूबसूरत लफ़्ज थे।

किस कदर बदरंग अब इनके मआनी हो गये ॥"⁴

धार्मिकता का आश्रय लेकर आतंक तथा डर फैलाया जा रहा है। उन पवित्र स्थलों का उपयोग अब आतंकवादियों के ठहरने का स्थान बनता जा रहा है। जिससे धार्मिक स्थलों की गरिमा व पवित्रता नष्ट हो गई है। चाहे वो मंदीर हो, मस्जिद हो या गुरुद्वारा हो। ये दंगे फसाद के साथ आतंकवादियों के लिए आश्रय स्थल का काम करते हैं। आज वे पहचान में नहीं आते कि वे पुजारी हैं या आतंकवादी हैं। इनका विरोध करते हुए डॉ. कुँअर बेचैन लिखते हैं। कुछ शेर निम्नलिखित हैं -

"जैसे कि लफ़्ज अपनी किताबों के साथ है।

आँखें हमारी आपके ख्वाबों के साथ है ॥

बस दो ही लोग अमन के दुश्मन बने हुये।

जो अपनी जिद में खून - खराबों के साथ है ॥

अच्छे बुरे की हो भी तो पहचान किस तरह।

चेहरे सभी के आज नकाबों के साथ है ॥"⁵

धार्मिकता का उपयोग आज के राजनेता बड़े ही खूबी के साथ करते हैं। वे साम्प्रदायिकता की समस्या का तो निवारण करने का मात्र दिखावा करते हैं, आम जनता को धर्म के नाम पर, मंदीर, मस्जिद के नाम पर गुमराह करता है, उनकी भावनाओं को भड़काते हैं। उन्हें मंदीर अथवा मस्जिद से कोई सरोकार नहीं है, वे तो सत्ता हथियाना चाहते हैं। वे मात्र शासन पर अपना अधिकार किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, उसके लिए हर प्रयास करते रहते हैं। इस प्रकार की दोहरी राजनीति राजनेता करता है। डॉ. कुँअर बेचैन ने भी इस संदर्भ में अपनी धारदार



लेखनी के जरिए बहुत कड़ा व्यंग्य कसकर उनके विरोध में कुछ लिखने का प्रयास किया है। वे अपनी एक गजल में कुछ इसी प्रकार के भावों को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं। उदाहरण स्वरूप गजल के कुछ शेर द्रष्टव्य हैं -

"कैसे किसी के बारे में सोचे यहाँ कोई।

रहता नहीं है, लोगों को अब अपना ध्यान तक ॥

दुनियाँ है ये यहाँ पे अलग सबकी दौड़ है।

मस्जिद तलक है इसकी तो उसकी दुकान तक ॥"⁶

भारत की धर्मभूमि में धार्मिकता के बीज सदैव ही पनपते रहते हैं। जिस देश में बुद्ध ने शांति, अहिंसा, समता को स्थापित किया मानवता को सर्वोच्च स्थान दिया, ऐसे देश में कुछ स्वार्थी, सत्तालोलुप लोगो व्दारा अशान्ति फैलाने का काम किया जा रहा है, डॉ. कुँअर बेचैन इस साम्प्रदायिकता के आग से इस चमन को बचाना चाहते हैं उसकी तबाही को रोकने के लिये प्रयत्नशील हैं, वे अपनी एक गजल में लिखते हैं।

"इस व्यवस्था की पतंग की ढील से लड़ते रहो।

दोस्तों जैसे भी हो इस रील से लड़ते रहो ॥

रोशनी के नाम पर जलता हुआ बारूद है।

छप्परोँ, इस छल भरे कंदील से लड़ते रहो ॥

एक खूनी प्यास का सैलाब अब आने को है।

प्यास के मारों समय की झील से लड़ते रहो ॥"⁷

यहाँ डॉ. कुँअर बेचैन ने एकात्मता और समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए ईश्वर हर जगह है चाहे काशी हो या मदीना हो एक ही रूप सभी में विद्यमान है, इसके व्दारा भाईचारा का भाव भी डॉ. कुँअर बेचैन की गजलों में परिलक्षित होता है, जिसमें अलौकिक प्रेम व ईश्वर के प्रति सर्वत्र की भावना अभिव्यक्त की गई है। लेकिन ईश्वर को प्राप्त करने के लिए कई इम्तहानों से गुजरना पड़ता है। तभी ईश्वर के दर्शन होते

हैं। यही डॉ. कुँअर बेचैन अपनी एक गजल में कहते हैं। शेर देखिए-

"वो इस जहाँ के पार है, मैं इस जहान तक।

ये दूरियाँ रहेंगी मगर इम्तहान तक ॥

हूँ जन्म से ही जिस्म में अपने किरायेदार।

मेरा सफर है, इस मकाँ से उस मकान तक ॥"⁸

ईश्वर का भ्रम होता है, गजल में भी उन्होंने यही कहा है कि जीव और ईश्वर में यही अन्तर है। ईश्वर इस जहाँ से परे है, और इन्सान इसी जहान तक है। लेकिन जीव इसी शरीर में किरायेदार की तरह रह रहा है। यह शरीर रूपी कमरा भी नश्वर है। इसमें ईश्वर की अलौकिकता ही डॉ. कुँअर बेचैन ने दर्शायी है, जिसमें ईश्वरीय सत्ता की सीमा का विवेचन किया है कि वह असीम है।

ईश्वरी स्मरण में मानव सदैव लीन रहता है। इसलिए वह मन ही मन बिना होंठ हिलाए ईश्वर का स्मरण करता है। डॉ. कुँअर बेचैन ने उसका वर्णन अपने एक गजल में किया है कि वह मेरे मन की बातों को कभी भी खुलकर नहीं सुनता उसके प्रति मेरे मन में सदैव संवाद चलते रहते हैं। अर्थात् वह दिल में रहकर भी कभी सुनता है, कभी नहीं सुनता इसलिए डॉ. कुँअर बेचैन अपनी एक गजल में लिखते हैं। कुछ शेर देखिए-

"अधर चुप है, मगर मन मे कोई संवाद जारी है।

मैं खुद में लीन हूँ, लेकिन किसी की याद जारी है ॥

कभी सुनता नहीं खुलकर जो मेरे दिल की बातों को।

अभी थी सामने उसके मेरी फरियाद जारी है।"⁹

डॉ. कुँअर बेचैन कहते हैं कि मेरी उससे मिलने के लिए, फरियाद अभी भी जारी है। उसका यह दृढ विश्वास है कि इस दुनियाँ में ईश्वर है। जो इस सृष्टी को चला रहा है अन्यथा इस संसार में कुछ भी नहीं है, यह नश्वर है। यहाँ हर जीव आता है चला जाता है। लेकिन ईश्वर एक ऐसी शक्ति है जो दिखाई तो



नहीं देती लेकिन उससे बड़ा इस संसार में कोई नहीं है ।
 डॉ.कुँअर बेचैन कहते हैं कि, अब तेरे सिवा बता मेरा इस जहाँ
 में कौन है, कोई दूसरा नहीं है, जो ये सब कर सकता है । वे
 अपनी एक गजल में लिखते हैं । कुछ शेर देखिए-

"तू नहीं है तो क्या है, दुनिया में।
 एक तन्हा हवा है, दुनिया में ॥
 सारी दुनिया ही आनी जानी है।
 कौन तुझसा सगा है दुनिया में ॥
 तू दिखाई नहीं दिया फिर भी।
 कौन तुझसा बड़ा है दुनिया में ॥
 ये बता कौन फिर सिवा तेरे।
 अब मेरा दूसरा है दुनिया में ॥" ¹⁰

आज के समाज में नारी शोषण की सबसे बड़ी समस्या है। दहेज जो पुरानी परम्परा के रूप में थी, आज एक प्रथा बन गयी है। किन्तु इसका जो विकृत रूप आज अप्रत्यक्ष रूप से समाज में है, वह चिंता का विषय है, हर परिवार में लड़कियाँ हैं। लड़को की बोली लगाई जाती है। दहेज के कारण किसी की शादी रूक जाती है, तो किसी की मंडप से बारात लौट जाती है, किसी की शादी हो जाती है किन्तु उसे ससुराल में बहुत प्रताड़ित किया जाता है, विशेषकर जिस पर अधिक विश्वास होता है, अर्थात् पति भी उसकी उपेक्षा करता है, तब वह बहु अपमानित होकर जल मरती है, या परिवार के लोग उसे अपने अपने हथकंडे अपनाकर षडयंत्र रचकर उसे जला देते हैं। इस मार्मिकता को भी गजलजकारों ने अपनी गजलों द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है, डॉ. कुँअर बेचैन की एक गजल के कुछ शेर दृष्टव्य हैं:

"वो भी औरत सी है लाचार नहीं बोलेगी।
 कुछ भी लिख दीजिये, दीवार नहीं बोलेगी ॥
 देखकर फूल-सी पीठों पे यें कोड़े के निशाँ।

क्या तेरी लेखनी फनकार नहीं बोलेगी ॥
 कितनी कलियों के बदन नोंचे गये हैं उनमें।
 ये किसी महल की मीनार नहीं बोलेगी ॥
 ये तो मजबूर दुल्हन की है हथेली साहब ।
 इसपें मेहंदी है के अंगार नहीं बोलेगी ॥
 हाथ क्या पीले हुये हो गई गुडिया गूंगी।¹¹

निष्कर्ष:

यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि डॉ. कुँअर बेचैन ने 'कोई आवाज देता है' और 'आँधियो धीरे चलो' गजलों के माध्यम से धार्मिक प्रवृत्तियों के अन्तर्गत होने वाले अराजक तत्व, पाखंड, ढोंग और शोषण का विवेचन किया है । तथा उन प्रवृत्ति पर तीक्ष्ण चोट की है । समाज विघातक प्रवृत्ति के कारण समाज में, देश में उत्पन्न होने वाले दंगे का, देश की अशांतता, साम्प्रदायिक तनाव से ग्रस्त होने वाली परिस्थितियों का पर्दाफाश किया है । कुँअर बेचैन ने अपनी गजलों के द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया है कि आज के राजनेता धर्म का आश्रय लेकर आपस में कैसी राजनीति खेलते हैं और देश की जनता को कैसे गुमराह करते हैं । साम्प्रदायिकता के नाम पर दंगे-फसाद कैसे कराए जाते हैं, सत्ता ही राजनेता के लिए सब कुछ है, इस बात से लोगों को आगाह किया है । इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने अपनी गजलों द्वारा साम्प्रदायिक सद्भाव एवं समसामायिक धार्मिक बोध का यथार्थ चित्रण अपनी गजलों के द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है ।

संदर्भ ग्रंथ:

1. आठवे दशक की कविता में सामाजिक बोध – डॉ.नामदेव –पृष्ठ क्र. 169



- | | |
|--|---|
| 2. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल –डॉ.मधु खराटे पृष्ठ क्र.181 | 7. आँधियों धीरे चलो - डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.119 |
| 3. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.49 | 8. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.34 |
| 4. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.43 | 9. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.40 |
| 5. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.60 | 10. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.92 |
| 6. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.34 | 11. कोई आवाज़ देता है- डॉ कुँअर बेचैन - पृष्ठ क्र.102 |